om-10_Page 1 and 2 18-08-2014 10:04 Page 9

''तेरी याद आई तो अखियाँ भर आई''

उनके प्रशासन की चहुँ ओर प्रशंसा होती थी..., जब वे चलती थीं तो हज़ारो के होठों पर मुस्कान झलकने लगती थी..., जब वे मुरली सुनाती थीं तो सबके मन मयूर नृत्य करने लगते थे..., जब वे फैसले देती थीं तो उसमें विश्व कल्याण की भावना दृष्टिगोचर होती थी और जब वे योग में बैठती थीं तो प्रभु-प्रेम की तरंगें चहुँ ओर अनुभव होती थीं... जिनका अभाव आज सभी को अत्यधिक महसूस होता है। सब बहुत कहते हैं कि काश आज वे होतीं। जिनकी पुण्य तिथि 25 अगस्त सम्मुख है। प्रस्तुत हैं उनके जीवन की कुछ महानताएँ। उनकी ममतामयी बातें...

बात 40 वर्ष से भी ज़्यादा पूर्व की है। माउण्ट आबू, हमारे मुख्यालय में 50 पत्रकार प्रथम बार आये। दादी जी ने शाम के समय सभी का स्वागत किया और इतनी प्यार भरी वाणी बोली कि अगले दिन 20 अखबारों में छपा...''प्यार की प्रतिमूर्ति दादी प्रकाशमणि''।

वे सबको अपनेपन की भासना देती थीं। उनकी दृष्टि ही ऐसी थी कि ये सब हमारा परिवार है। इसमें सब खुश रहें। संगठन में अनेक लोग गलती भी करते थे परन्तु उनका शिक्षा देने का तरीका अति स्नेह-पूर्ण था। हम भी तब छोटे थे, हम भी कई गलती करते थे, परन्तु दादी ने कभी डाँटा नहीं, बल्कि सिखाने की दृष्टि से प्रेरक बोल बोले।

इस बात के लिए वे बहुचर्चित थीं कि वे प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। उनके चेहरे पर सदा प्रेम व खुशी की झलक देखी जा सकती थी। उनकी प्रसन्न मुद्रा के कारण कोई भी उनसे सहज ही मिल लेता था। यद्यपि वे ब्रह्माकुमारीज़ की चीफ थीं, परन्तु उनके प्रशासन में डर नहीं प्रेम था।

वे ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित थीं ब्रह्माबाबा उन्हें ज्ञान की बुलबुल कहते थे। वे सफल वक्ता व श्रेष्ठ चिंतक थीं। उनके चहुँ ओर अनेकों ने प्रकाश की झलक देखी थी। उनकी वाणी बड़ी ही प्रभावशाली थी। सब गर्व करते थे कि हमारी चीफ श्रेष्ठ स्वीकर हैं।

ज्ञान सुनाना तो सभी को आता है, परन्तु ज्ञान-स्वरूप जीवन बनाना - वे इस कला में पारंगत थीं। वे कहती थीं कि हमारा जीवन ज्ञान दर्पण है, इसमें सभी को अपने चरित्र की तस्वीर दिखनी चाहिए। हमने सदा ही उन्हें ज्ञान की मस्ती में मग्न देखा। यही कारण था उनकी वाणी में प्रभाव का। जब वे ईश्वरीय महावाक्य सुनाती थीं तो हॉल में परम आनंद का माहौल बन जाता था और इतने सरल ढंग से महावाक्य सुनाती थीं कि वे सहज ही हृदयंगम हो जाते थे। सागर जैसा दिल था उनका...

वे तब से संस्था की मुख्य प्रशासिका थीं, जब यज्ञ साधारण था अथवा धन-संपन्न नहीं था, परन्तु इस महान यज्ञ में वे अति उदारता से ब्रह्मा भोजन कराती थीं, क्योंकि ये हमारा विषय था। हम देखते थे कि खिलाने पिलाने में राजाओं जैसा दिल। प्रति वर्ष सभी को पूरे वर्ष के वस्त्र मिलते थे, उसमें सबको खुश रखती थीं। लिस्ट लेती थीं कि किसको क्या चाहिए, ताकि उनके परिवार में किसी को कोई तंगी न हो।

वे ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सभी टीचर्स को भी कहती थीं कि बड़ा दिल रखो। बड़ा दिल रखोगे तो भण्डारे भरपूर रहेंगे। अपने साथियों को खुश रखो, उनकी दुवाओं से सेवाएँ बढ़ेंगी। जहाँ भी कुछ खर्च करने की बात आती, तो वे एकोनॉमी तो अवश्य सिखती थीं परन्तु दिल खुला रखती थीं।

हमने देखा इस धर पर सम्पूर्ण पवित्र आत्मा को...

इन आँखों से दादी प्रकाशमणि के रूप में सम्पूर्ण पवित्र आत्मा को देखने का सौभाग्य मिला। उनकी दृष्टि निर्मल, वाणी सुखद और वृत्ति अति कल्याणकारी थी। उनके मुख की चमक उनकी पवित्रता की झलक थी। वे निष्पाप थीं और कर्मठ थीं।

ऐसी पवित्र आत्माएँ इस वसुन्धरा पर वरदान होती हैं। उनका पुनर्जन्म भी ऐसे महान श्रीमानों के घर हुआ जो पानी भी प्रभु-अर्पण करके पीते हैं, जिनका प्रांगण सात्विक है और स्वयं भाग्य विधाता ने उन्हें महान कर्तव्यों के लिए ही वहाँ भेजा है। हमने देखा कि उनकी पवित्रता के समक्ष ही अनेक महामण्डलेश्वर महात्माओं के शीश भी झुकते थे।

बुद्धि तैयार होती है उनकी महानताओं को अपनाने के लिए...

वे महान थीं। महान मनुष्य में जो महान धारणाएँ होती हैं, उन्हें अपनाने को मन करता है। वे पूर्णतया संतुष्ट थीं, निरहंकारी थीं, हर्षित चित्त थीं, किसी का भी अवगुण याकिया गया बुरा व्यवहार उनके चित्त पर नहीं रहता था। उनके मन में किसी के लिए भी बदले का भाव नहीं देखा गया। हमने देखा उन्हें सभी को क्षमा करते। वे नम्रता व मृदुता की प्रतिमूर्ति थीं, क्रोध व आवेश से परे थीं। उनका व्यवहार योग्य था। सभी छोटी-बड़ी टीचर बहनें उनसे मिलकर महसूस करती थीं कि वे हमारी हैं और हम कभी भी ज़रूरत पड़े तो दादी जी उनके साथ रहेंगी। उनकी छत्र-छाया में वे अपने को सुरक्षित अनुभव करती थीं।

वे दयावान थीं, किसी के आँसू नहीं देख सकती थीं। स्वयं परम-शिक्षक परम-आत्मा ने भी उनकी महिमा करते हुए कहा था कि वे 'मैं' पन से मुक्त, सदा निमित्त, निर्मान भाव में रहने वाली निर्मल चित्त थीं। वे ऐसी प्रशासक थीं जो सभी का बहुत ध्यान रखती थीं। वे सरल स्वभाव सम्पन्न सहज योगी थीं। अपने सम्पूर्ण संगठन की प्रसन्नता का बहुत ख्यान करती थीं। आज सभी उनके इस आचरण को स्मरण कर उनका अभाव महसूस करते हैं।

ये महानताएँ मनुष्य को महा मानव बनाती हैं। हम भी उन्हें जीवन में अपनायें। यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजली है। वे स्वयं तो आगे बढ़ती ही थीं, परन्तु दूसरों को आगे बढ़ाने में स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती थीं। ऐसी थीं वे महान आत्मा। आईये उनके स्मृति दिवस पर उन जैसे राजाई संस्कार बनाने का संकल्प करें। जब उनके साथ बिताये गये दिन याद आते हैं तो सिर श्रद्धा से झुक जाता है। उन्हें याद करने का अर्थ है, उन जैसा समर्पण भाव स्वयं में अपनायें। जितना उनमें प्रभु-प्रेम था, जितना उनमें यज्ञ-प्रेम व मुरली-प्रेम था, वैसा ही हम भी रखें। हम श्रद्धा पूर्वक उन्हें नमन करते हुए उन्हें अपना प्रेम व सम्मान अर्पित करते हैं। **- ब्र.कु. सुर्य ,माउण्ट आबू।**

-ब्र.कु. प्रकाश,दादी काटेज, शांतिवन।

दादी जैसे महारथी का सारथी बना

वैसे तो इस दुनिया में महान विभूतियाँ जन्म लेती हैं जो अपने पीछे बहुत सारी स्मृतियाँ प्रेरणा में सबके लिए छोड़कर जाती हैं, ऐसे ही हैं हमारी स्नेही, अति प्यारी, अति मीठी आदरणीय डॉ.दादी प्रकाशमणि जी, जिनके बारे में क्या कहें, जितना कहें, लिखना चाहें शब्द अधूरे हैं। दादी जी का जीवन सम्पूर्ण है, सार्थक है और प्रेरक है। मुझे दादी जी के साथ 14वर्ष बहुत समीप से उनकी सेवा करने का चांस मिला। दुनिया में हरेक मनुष्य किसी महापुरुष, साधु-संतों का सानिध्य पाना चाहते हैं, परंतु मुझ आत्मा को ऐसी श्रेष्ठ परम पवित्र, ममतामयी, वातसल्य स्वरूपा दादी जी के समीप रहने का सुनहरा चांस मिला। मैं जब मधुबन समर्पित होकर बड़ों के साथ समीप यदि रहने का चांस मिले तो इससे बड़ा भाग्य और क्या हो सकता। बाबा ने मेरा यह संकल्प भी पूरा किया मधुबन में एक साल सेवा करने के बाद दादी प्रकाशमणि जी की गाड़ी चालाने का पहला दिन आज भी मुझे याद है। शुरु-शुरु में यज्ञ में एकाध कार ही थी। एक दिन इन्चार्ज भाई ने मुझे दादी को आबु रोड ले जाने को कहा उस समय मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। दादी जी मेरी गाड़ी में आगे बैठी, मोहिनी बहन जी, मुन्नी बहन तथा ईशु दादी जी पीछे की सीट पर। किसी ने भी ऊपर से नीचे संगम भवन तक मेरे से बात नहीं की। जब वापिस ऊपर जाने लगे रास्ते में एक मोड़ पर दादी जी ने मेरे कंधे के ऊपर हाथ रखकर मेरे से पूछा प्रकाश आज के बाद दादी जी की सेवा करने का चांस मिले तो करोगे? दादी जी ने विनम्र भाव से मेरे से पूछा मैं उसी समय दादी जी को कहा, दादी जी बाबा ने एक साल के अंदर ही मेरा संकल्प पूरा कर दिया। उसके बाद 14 वर्ष लगातार दादी जी की सेवा करने का भग्य मिला। दस दौरान दादी जी को समीप से देखने का अवसर मिला।उनका हर कार्य उठना, चलना, बैठना अलौकिक छाप सभी के मानस पटल पर छोड़ जाती थी, हर कर्म में गुण विशेषता दिखाई देती थी। एक बार की बात है मैने एक अज्ञानी भाई को गाड़ी चलाने की सेवा पर रखा था, एक दिन उसने शराब पी ली, बात दादी जी तक गई। मुझे बुलाया गया, दादी जी ने पूछा मैं क्या सुन रही हूं? मैने कहा दादी जी आपने ठीक सुना है, मैं सुबह उस भाई को निकाल दूंगा। दादी ने कहा नहीं मैंने इसलिए नहीं बुलाया है, उस भाई को एक मौका अवश्य दो, भूल की है तो रियलाइज का मौका दो। देखो दादी जी का उस आत्मा के प्रति भी कितनी श्रेष्ठ भावना परिवर्तन करने की थी। आज हम सभी उनको बहुत मिस करते हैं, उनके स्मृति दिवस पर हम उनके जीवन से यही प्रेरणा लें जैसा कि दादी जी ने अपने हर कर्म से चाल-चलन से बाबा की प्रत्यक्षता की.। उनकी विशेषताओं कों अपनाकर ही सच्ची श्रद्धांजलिअर्पित करनी होगी।

- ब्र.कु.शशिप्रभा,पाण्डवभवन।

दादीजी का विश्वास नही होने देता था हताश

1974 से मैंने स्थायी रूप से पांडव भवन में रहना आरंभ किया तब से दादी जी ने मुझे आध्यात्मिक जीवन की उन्नति में पूरा सहयोग दिया। दादी जी पूर्ण विश्वास के साथ मुझे कोई कार्य सौंपती थीं। जब मैं बिल्कुल नयी थी और किस कार्य को कैसे करना है वो अच्छी तरह नहीं समझ पाती थी तो दादी जी से बता देती थी कि 'दादी जी आपने मुझे ये कार्य दिया है, पर मुझे ये कैसे करना है नहीं आता'। दादी जी जवाब देती थी, बाबा और दादी को आपमें विश्वास है कि आप इस कार्य को कर लेंगी। दादी जी का विश्वास मुझे सदैव प्रेरणा देता रहा।

सभी सेवाओं के साथ-साथ मुझे विदेशी भाई-बहनों के आवास-निवास की व्यवस्था की ि-जम्मेवारी भी सौंपी गई। दादी जी को सभी आत्माओं को मधुबन में बुलाना बहुत पसंद था परंतु कई बार ऐसा होता था कि रहने का स्थान पूरा भर जाता था और कई विदेशी भाई-बहनों को स्थान नहीं मिल पाता था। एक बार मैंने दादी जी से पूछा कि दादी जी हमारे पास अभी ज्यादा स्थान की सुविधा नहीं है तो और अधिक आत्माओं को क्यों बुलाना? तो दादी जी ने कहा कि ये बाबा का घर है, यदि दिल बड़ा हो तो सब कुछ संभव है। थोड़ा एडजस्ट करने और दोबारा व्यवस्था करने पर सब आसानी से हो जाता था। कई बार दादी जी स्वयं हॉल की व्यवस्था देखने जाती थीं।

दादी जी ने मुझे बोलने की कला सिखाई जिसके लिए मैं सदा उनकी आभारी रहूंगी। दादी जी की बोलने की कला बहुत ही प्रभावशाली थी और स्पष्ट होती थी। जिसको भी जो सेवा देनी होती थी तो दादी जी व्यक्तिगत रूप से उनसे बात करती थी और फिर चेक करती थी कि सब कुछ ठीक चल रहा है। यही कारण है सभी प्रोजेक्टस दादी जी के निर्देशन में सफल हुए। दादी कभी ऐसा नहीं कहती थीं कि ये काम दादी ने किया है वो सदा कहती थीं कि ये सब बाबा का कमाल है, वही सब कुछ कर रहा है।

लंबे समय तक पांडव भवन में रहकर मैंने दादी जी से हर प्रकार का प्रशिक्षण लिया। दादी जी कभी किसी की कमज़ोरी अपनी बुद्धि में नहीं रखती थीं, परंतु एक विशाल समुद्र की भांति सभी की कमी-कमज़ोरियों को अपने में समाकर क्षमा कर देती थीं। दादी जी ने हमें सिखाया कि यदि हमारा मन-मस्तिष्क क्लीन और क्लीयर है तो हमारा बाबा के साथ योग पावरफुल होगा, हम अपने से बड़ों के समीप आयेंगे और सदा बाबा की छत्रछाया में अपने को महसूस करेंगे। दादी जी के मुझपर अटूट विश्वास ने मुझे स्वयं पर तथा अपने ब्राह्मण जीवन में विश्वास करने में सहायता की। दादी जी ने बहुत ही प्यार के साथ मेरी पालना की जिसके लिए मैं सदा उनकी शुक्रगुज़ार रहूंगी।